विभिन्न साहित्यों का पठन एवं निष्कर्षण

[READING AND REFLECTING ON TEXT]

(विभिन्न विश्वविद्यालयों के दो वर्षीय बी. एड. के नवीनतम् पाठ्यक्रमानुसार)

लेखिका :

पायल भोला जैन

एम. ए., बी. एड.

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट, दयालबाग

अग्रवाल पब्लिकेशन्स®

(ISO : 9001 : 2008 CERTIFIED COMPANY)

4 वाचन या पठन कौशल का विकास

[Developing Reading Skills (Loud and Silent)]

हिन्दी भाषा में चार मुख्य योग्यताओं को विकसित किया जाता है—वाचन, लेखन, श्रवण, बोलने का कौशल। **ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी** के अनुसार, ''पठन कौशल लिखे या मुद्रित शब्दों को बोलने की प्रक्रिया है।'' एक अच्छा वक्ता ही सदैव शब्दों व वाक्यों को उचित प्रकार से पढ़ व सुना सकता है। हिन्दी विषय में वाचन का अत्यधिक महत्व है। वाचन हेतु मुखर्जी ने कहा भी है कि वाचन अथवा पठन एक ऐसी कला है, जो कि ज्ञानार्जन की कुंजी है। वाचन शक्ति ठीक होने पर ही मनुष्य जटिल-से-जटिल विषयों को पढ़कर समझ सकता है व पढ़े अंश का सार समझकर बोल सकता है। वाचन मनुष्य का मृत्युपर्यन्त साथी है।

हिन्दी भाषा में पठन या वाचन का महत्वपूर्ण स्थान है। पठन या वाचन ज्ञान-प्राप्ति के साथ-साथ मनोरंजन के साधन भी हैं।

वाचन और पठन में अन्तर तथा वाचन की प्रकृति

साधारणतया अंग्रेजी में 'Reading' शब्द के लिए हिन्दी में दो शब्दों का प्रयोग होता है, वे शब्द हैं—वाचन और पठन। मूलतः इन दोनों क्रियाओं में थोड़ा अन्तर है, पठन का अर्थ व्यापक है और वाचन का अर्थ है—जोर-जोर से पढ़ना, जिसका आनन्द श्रोता भी ले सकें।

(i) वाचन मुद्रा—इससे हमारा आशय बैठने, खड़े होने, वाचन सामग्री को हाथ में पकड़ने तथा भावों के अनुकूल आँखों, हाथों और अंगों का संचालन करने से है।

(ii) वाचन शैली—इसका आशय कंठ साधकर भाव के अनुसार उचित उतार-चढ़ाव के साथ पढ़ने के ढंग से है।

उचित वाचन मुद्रा के साथ जो व्यक्ति वाचन सामग्री को भावों के अनुसार अंगों का संचालन करते हुए पढ़ता है, वह श्रोताओं को बरबस अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है। अच्छा वाचनकार आगे चलकर एक अच्छा वार्ताकार, प्रभावशाली वक्ता और सफल अभिनेता हो जाता है।

वाचन की विशेषताएँ (CHARACTERISTICS OF READING)

एक सुरुचिपूर्ण और सुन्दर वाचन की निम्नांकित विशेषताएँ हैं–

(i) अच्छा वाचन आरोह-अवरोह के साथ प्रभावोत्पादक ढंग से किया जाता है।

(ii) प्रत्येक शब्द को अन्य शब्दों से अलग करके उचित बल और विराम के साथ पढ़ना, अच्छे वाचन का दूसरा गुण है।

(iii) वाचक अपने वाचन में आवश्यकतानुसार भाव-भंगिमाओं का प्रदर्शन करता है।

(iv) यह वाचन में सुस्वरता के साथ प्रवाह बनाये रखता है।

अत्यन्त सुन्दर शैली में लिखी गयी वाचन सामग्री साधारण पाठक के मुख से निकलकर नीरस और निरर्थक प्रतीत होती है। इसके विपरीत साधारण-सी वाचन सामग्री को भी एक अच्छा वाचक प्रभावोत्पादक ढंग से प्रस्तुत कर श्रोताओं का मन मोह लेता है।

वाचन शिक्षण के उद्देश्य (AIMS OF READING TEACHING)

भाषा शिक्षण में वाचन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जिस प्रकार मानव जीवन में भाषा की आवश्यकता होती है, ठीक उसी प्रकार भाषा को समुचित रूप से सीखने में वाचन की आवश्यकता होती है। कोई भी छात्रा बिना पठन या वाचन की शिक्षा प्राप्त किये, भाषा की शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकता। भाषा शिक्षण के चार कौशलों में पढ़ना सबसे महत्त्वपूर्ण कौशल है। पठन या वाचन से लिखना तथा कहना प्रभावित होता है। कुछ सीमा तक सुनने का भी सम्बन्ध पठन से ही है।

वाचन का शुद्ध और प्रभावोत्पादक होना आवश्यक है। वाचक के वाचन में शुद्धता और प्रभावोत्पादकता सही वाचन शिक्षण द्वारा ही आती है। वाचन शिक्षण करते समय शिक्षक को निम्नांकित उद्देश्यों को ध्यान में रखना चाहिये–

(i) बालकों के अक्षरोच्चारण, शब्दोच्चारण शुद्ध होने चाहिये, ताकि वे वाचन सामग्री को उचित, निर्गम, बल सुस्वरता के साथ पढ़ सकें।

(ii) उनके स्वरों में ऐसा आरोह-अवरोह हो कि भावों के अनुकूल उसमें लोच हो।

(iii) वाचन इतना प्रभावोत्पादक हो कि श्रोता का मन मुग्ध हो जाय।

(iv) बालक वाचन सामग्री का भाव समझ सके और दूसरों को भी समझा सके।

(v) सार्थक या अर्थ समझाते हुए बोधगम्य रूप से वाचन कर सके।

वाचन के प्रकार–मुख्यतः वाचन/पठन के दो प्रकार हैं–

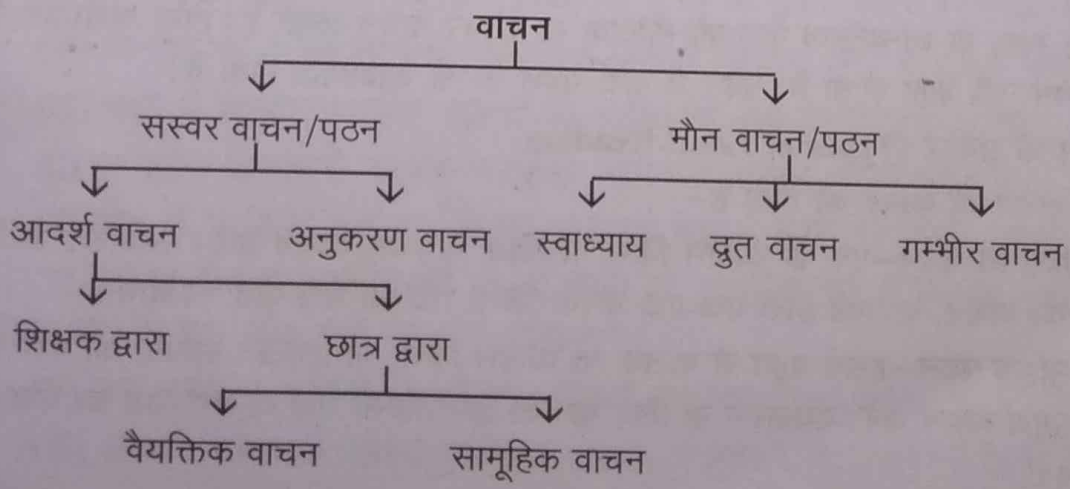

जब कोई बालक पठन या वाचन कर रहा है तो उस समय वह एक पुस्तक/पत्रिका/साइन-बोर्ड/कापी को देख रहा होता है। प्रायः उसके सामने पठनीय वस्तु के रूप में सफेद कागज पर बने हुए चिह्न होते हैं। ये चिह्न प्रायः गहरे रंग की स्याही के बने होते हैं–

वाचन के समय वाचक का चेहरा—
- → लाल हो सकता है।
- → खिल सकता है।
- → पीला पड़ सकता है।

यह प्रतिक्रिया कॉपी के उन चिह्नों को पढ़कर वाचक की होती है। "वाचन वह क्रिया है जिसमें प्रतीक, ध्वनि, अर्थ साथ-साथ चलते हैं।"

डिसेन्ट के अनुसार, "पठन लेखक द्वारा उद्दिष्ट, सुलिखित, सुवर्णित प्रतीकों को किसी के अनुभव की विधि से उनको सम्बन्धित करके सार्थकता देने की प्रक्रिया है।"

लिपि-प्रतीक को पहचानकर उनका पूर्वापर सम्बन्ध स्थापित करते हुए सम्पूर्ण आशय समझ लेने की प्रक्रिया ही वाचन है। ये हैं–

(i) सार्थक वाचन,

(ii) निरर्थक वाचन–(रोटी-वोटी खाली, पानी-वानी पी ले)।

वाचन के प्रकार, सस्वर वाचन, मौन वाचन, विस्तृत एवं गहन वाचन (TYPES OF READING–LOUD READING, SILENT READING, EXTENSIVE AND INTENSIVE READING)

वाचन दो प्रकार से किया जाता है–एक तो मुँह से ध्वनियों का उच्चारण करते हुए और दूसरा मौन रूप से। इस आधार पर वाचन दो प्रकार का होता है–

वाचन के प्रकार (Types of Reading)

1. सस्वर वाचन (Loud Reading)
2. मौन वाचन (Silent Reading)

1. सस्वर वाचन (LOUD READING)

लिखित भाषा के ध्वन्यात्मक पाठ को मौखिक या सस्वर वाचन कहते हैं। बिना अर्थग्रहण किये पढ़ने को वाचन नहीं कहा जाता है। पठन में अर्थ ग्रहण करना आवश्यक होता है।

सस्वर वाचन के प्रकार (Types of Loud Reading)

सस्वर वाचन दो प्रकार का होता है–

(1) व्यक्तिगत पठन–एक ही व्यक्ति किसी लिखित भाग का वाचन करे। उदाहरण के लिए, कथा-वाचक का वाचन, बालकों द्वारा एक-एक करके किसी गद्य या पद्य पाठ का वाचन।

(2) सामूहिक पठन–इसमें बहुत से बालक या व्यक्ति किसी भी लिखित सामग्री का एक साथ, एक स्वर के साथ वाचन करें। उदाहरण के लिए बालकों द्वारा किसी गद्य या पद्य पाठ का एक साथ मिलकर पढ़ना।

व्यक्तिगत वाचन शिक्षक द्वारा भी किया जाता है।

कक्षा शिक्षण में वाचन तीन प्रकार का होता है–

(I) आदर्श पठन–शिक्षक द्वारा किए गए व्यक्तिगत वाचन को आदर्श पाठन कहा जाता है। आदर्श पठन अध्यापक द्वारा प्रस्तुत वह पठन है जिसे वह उचित ढंग से खड़े होकर शुद्ध उच्चारण, उचित ध्वनि एवं भावानुसार शब्दों पर बल देते हुए, विराम का ध्यान रखते हुए उचित आरोह-अवरोह के साथ करता है।

(II) अनुकरण पठन–अध्यापक के आदर्श पाठ का बालक अनुकरण करते हुए पढ़ते हैं। वह अनुकरण वाचन व्यक्तिगत एवं सामूहिक दोनों प्रकार का होता है। बच्चों द्वारा किए गए अनुकरण पठन को अनुकरण पाठ करते हैं।

(III) समवेत पठन–समवेत पठन वह है जिसमें दो या दो से अधिक बच्चे एक साथ पठन करते हैं। समवेत पठन का यह लाभ होता है जिन बच्चों को पढ़ने में झिझक लगती है या जिनमें पढ़ने का साहस नहीं होता, जिन्हें अपने उच्चारण पर विश्वास नहीं होता या जो उचित गति से पठन नहीं कर सकते वे भी पठन करने लग जाते हैं।

सस्वर वाचन का महत्व (Importance of Loud Reading)

अच्छे सस्वर वाचन के द्वारा गद्य और पद्य का भाव समझ में आ जाता है। कविता का आनन्द तो उसके सस्वर पठन में ही होता है। भाषा शिक्षण की दृष्टि से भी सस्वर पठन का बहुत महत्त्व है। सस्वर पठन का महत्त्व निम्नलिखित बातों से है–

1. बालकों के अशुद्ध उच्चारण को शुद्ध करने में सहायता मिलती है।
2. बालकों का संकोच एवं झिझक दूर होती है। जो उनके सर्वांगीण विकास के लिए बहुत आवश्यक है।
3. लेखकों के विचारों से दूसरों को अवगत कराने हेतु सस्वर वाचन की आवश्यकता पढ़ती है।
4. सस्वर वाचन के द्वारा बालकों को सफल वक्ता बनाया जा सकता है।
5. कोई भी बात एक से अधिक व्यक्तियों को सस्वर वाचन द्वारा सुनाई जा सकती है।
6. कक्षा शिक्षण की दृष्टि से अध्यापक के आदर्श सस्वर पठन से कक्षा में जीवन बना रहता है और जब बच्चे अध्यापक का अनुकरण करते हैं तो उनके पठन कौशल का विकास होता है।

सस्वर वाचन के उद्देश्य (Aims of Loud Reading)

सस्वर वाचन के विभिन्न उद्देश्य हैं–

(i) व्यक्तिगत वाचन के उद्देश्य–व्यक्तिगत वाचन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है–

(क) बालकों की वाचन सम्बन्धी व्यक्तिगत कमियों को दूर करने में उनकी सहायता करना।

(ख) पढ़ने में अधिक कमजोर बालकों की व्यक्तिगत रूप से सहायता करना।

(ii) सामूहिक वाचन के उद्देश्य–सामूहिक वाचन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

(क) बालकों में किसी गद्य या पद्य को सामूहिक रूप से पढ़ने की प्रवृत्ति डालना।

(ख) संस्था गीत या भगवान की प्रार्थना आदि को सामूहिक रूप से समवेत स्वर में ताल तथा गतिबद्ध रूप से एक साथ गाने का अभ्यास कराना।

(ग) कम समय में अधिक से अधिक व्यक्तियों को लाभान्वित कराना।

(iii) आदर्श वाचन के उद्देश्य–कभी-कभी बच्चे वातावरण के सम्पर्क से कुछ शब्दों के अशुद्ध

उच्चारण सीख लेते हैं तो अध्यापक का कर्तव्य है कि वे आदर्श वाचन द्वारा बच्चे के उच्चारण को शुद्ध करवाये। इस प्रकार आदर्श वाचन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

(क) छात्र-छात्राओं को शब्द के उच्चारण का सही ज्ञान कराना।

(ख) छात्र-छात्राओं को वाचन में यति, विराम, लय एवं गति का उचित ज्ञान देना।

(iv) अनुकरण वाचन के उद्देश्य–अनुकरण वाचन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

(क) बालक सही उच्चारण एवं वाचन सीखकर दोहरा सकें।

(ख) वे अपनी वाचन सम्बन्धी कमियों को दूर कर सकें।

(ग) बच्चे शुद्ध एवं स्पष्ट वाचन से सम्बन्धित सभी बातों को सीखकर अपना सकें।

ऊपर लिखित सस्वर वाचन के उद्देश्य तभी पूर्ण हो पायेंगे जब बच्चों के उच्चारण में शुद्धता होगी। इसलिए अशुद्ध उच्चारण के दोषों का ज्ञान होना आवश्यक है।

सस्वर वाचन के गुण (Merits of Loud Reading)

सस्वर वाचन के निम्नलिखित गुण हैं–

(1) शुद्ध उच्चारण–सस्वर वाचन में शब्दों एवं वर्णों का उच्चारण शुद्ध होना चाहिए। शब्द में हर वर्ण का उच्चारण उचित स्थान में होना चाहिए। उच्चारण की अशुद्धि से शब्द का अर्थ ही बदल जाता है। जैसे–गृह, गिरह, ग्रह और समान, सम्मान, सामान आदि।

(2) उचित ध्वनि निर्गम–मुख से जो भी अवयव ध्वनि निर्गम से सक्रिय होते हैं उनका सही प्रयोग होना चाहिए। कंठ, तालु, मूर्धा, दन्त, ओष्ठ, नासिका आदि स्थानों से ध्वनि सही ढंग से उच्चारित होनी चाहिए।

(3) उचित बल एवं विराम–वाचन करते समय बालक को इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि कहाँ कम रुकना है, कहाँ अधिक, कहाँ प्रश्न ध्वनि का प्रयोग करना है। उचित बल एवं विराम के नहीं होने से पाठ्य सामग्री का अर्थ बदल जाता है जैसे–

रोको, मत जाने दो

रोको मत, जाने दो

(4) उचित लय एवं गति–किसी गद्य या पद्य का पाठ करते हुए विषय वस्तु को उचित लय एवं गति के अनुसार पढ़ना चाहिए। वाचन न तो तीव्र गति से होना चाहिए और न ही मन्द गति से हो।

(5) उचित वाचन मुद्रा–सस्वर वाचन करते समय पाठक की मुद्रा ठीक होनी चाहिए। पुस्तक आँख से एक फुट दूर होनी चाहिए। श्रोताओं की ओर वाचन करते हुए बीच-बीच में देख लेना चाहिए।

(6) उचित हाव-भाव–सस्वर वाचन करते समय विषय-वस्तु के भाव के अनुसार हाव-भाव का प्रदर्शन करना चाहिए। जैसे क्रोध का भाव, प्रेम का भाव, वीरता के भाव आदि के अनुसार हाव-भाव प्रदर्शन करना चाहिए।

(7) स्वर माधुर्य–वाचन करते समय पाठक के स्वर में मधुरता होनी चाहिए। पाठक का स्वर स्पष्ट सुनाई दे।

(8) प्रभावोत्पादकता–वाचन में प्रभाव लाने के लिए पाठक की दृष्टि परिधि व्यापक होनी चाहिए। उसकी दृष्टि केवल पुस्तक पर न होकर धारा प्रवाह गति के वाचन के ऊपर होनी चाहिए। ऐसा करने से वाचन में प्रभावोत्पादकता आती है।

(9) स्वाभाविकता–वाचन करते समय पाठक को स्वाभाविक ढंग से पढ़ना चाहिए। वाचन करने में बनावटीपन नहीं होना चाहिए।

(10) अंग संचालन—वाचन करते समय पाठक को अपने हाथ, पैर, सिर, आँख, भौंह आदि का स्वाभाविक रूप से अंग संचालन करना चाहिए। इससे वाचन प्रभावशाली बनता है।

वाचन की शिक्षण विधियाँ (METHODS OF READING)

वाचन की शिक्षा देने के लिए निम्नलिखित विधियों का प्रयोग करना चाहिए—

(1) अनुकरण विधि—इसमें अध्यापक एक-एक शब्द का उच्चारण ध्यानपूर्वक करता है और बालक अध्यापक के उच्चारण का अनुकरण करके वाचन सीखता है।

(2) भाषा शिक्षण यन्त्र विधि—इस विधि में भी बालक अनुकरण द्वारा सीखता है। भाषा के शुद्ध उच्चारण का रिकॉर्ड इस विधि में बजाया जाता है और बालक उनका सही-सही अनुकरण करते हैं। परन्तु यह विधि खर्चीली है। निर्धन देश इसका प्रयोग नहीं कर सकते।

(3) सामूहिक पठन विधि—यह विधि बाल गीतों का वाचन कराने के लिए अच्छी है। इस विधि में बालक शिक्षक के आदर्श पाठ का अनुकरण सामूहिक रूप से करते हैं। इस विधि से बालकों को स्वर का ज्ञान होता है और वे वाचन अच्छी तरह करते हैं।

(4) देखो और कहो विधि—इस विधि के अन्तर्गत बालकों को अक्षरों तथा ध्वनियों का ज्ञान कराने से पहले शब्दों का ज्ञान कराया जाता है। शब्दों का ज्ञान कराने के लिए उन्हें शब्दों से सम्बन्धित वस्तुएँ दिखाई जाती हैं, लेकिन सभी वस्तुओं को दिखाना सम्भव नहीं होता इसलिए वस्तुओं के चित्र दिखाए जाते हैं। जिस वस्तु का चित्र होता है उसके नीचे उसका नाम लिखा होता है। चित्र में दिखाई गई वस्तु जानी पहचानी होती है। इसलिए बालक नीचे लिखे शब्द का उससे सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं तो फिर शिक्षक उस शब्द का उच्चारण करता है और बालक उसका अनुकरण करते हुए बोलते हैं। इसके बाद विश्लेषण द्वारा अक्षरों का उच्चारण करना सिखाते हैं।

(5) साहचर्य विधि—इस विधि के द्वारा खिलौनों, चित्रों, विभिन्न प्रत्यक्ष वस्तुओं और शब्दों में साहचर्य स्थापित किया जाता है। उदाहरणार्थ शेर के चित्र के नीचे शेर लिखकर समझा दिया जाता है। फिर बालक से कहा जाता है कि वे नाम वाले कार्डों को ढूँढ-ढूँढकर सही चित्र के साथ लगाएँ। बालक इस प्रकार के कार्य रुचि लेकर करते हैं।

(6) ध्वनि साम्य विधि—इस विधि के समान उच्चारण वाले शब्दों को एक साथ सिखाया जाता है जैसे—राम, काम, नाम, महेश, नरेश, सुरेश आदि। इस विधि का यह दोष है कि ध्वनियों पर अधिक बल दिया जाता है न कि शब्दों के अर्थ पर। इस विधि द्वारा सीमित शब्दों को ही सिखाया जा सकता है।

(7) शब्द-शिक्षण विधि—इस विधि के अनुसार सार्थक शब्दों को पढ़ने की शिक्षा दी जाती है जैसे—मामा, पापा, चाचा आदि। इस विधि द्वारा बालकों का मनोरंजन भी होता है इसलिए यह विधि मनोवैज्ञानिक भी होती है। बालक फिर धीरे-धीरे कठिन शब्दों को भी सीख लेते हैं। इस विधि के प्रयोग के लिए शिक्षक को कुशल होना चाहिए। तभी वह बालकों को अच्छी तरह शब्दों का उच्चारण सिखा सकता है।

(8) वर्ण-शिक्षण विधि—इस विधि के अनुसार पहले स्वर फिर व्यंजन, मात्राएँ, संयुक्ताक्षर और सार्थक शब्द सिखाए जाते हैं। वर्तमान स्कूलों में इसी विधि द्वारा वाचन की शिक्षा दी जाती है। पर यह विधि सबसे पुरानी विधि है।

(9) वाक्य-शिक्षण विधि—यह विधि अक्षर-बोध विधि के विपरीत है। अक्षर-बोध विधि में पहले अक्षर ज्ञान, फिर शब्द ज्ञान और फिर वाक्य ज्ञान कराया जाता है, परन्तु इस प्रणाली में पहले वाक्य ज्ञान, फिर शब्द ज्ञान और अन्त में अक्षर ज्ञान कराया जाता है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार बालक अपनी दृष्टि पूर्ण वाक्य पर डालता है। इसलिए इस विधि में शिक्षण का क्रम है वाक्य-शब्द-अक्षर।

उपरोक्त विधियों में कोई भी विधि पूर्ण नहीं है प्रत्येक विधि में कुछ-न-कुछ कमी है। इसलिए शिक्षक के लिए यह बहुत कठिन होता है कि किस विधि को अपनाए ? शिक्षक को समय, सुविधा एवं परिस्थिति के अनुसार जो विधि उचित लगे उसे अपनाना चाहिए।

2. मौन वाचन
(SILENT READING)

लिपिबद्ध भाषा अर्थात् लिखित सामग्री को बिना किसी ध्वनि किए हुए मन ही मन में पढ़ने और साथ-साथ अर्थ ग्रहण करने की क्रिया को मौन वाचन कहते हैं। मौन वाचन में नेत्र लिखित सामग्री को जल्दी-जल्दी पढ़ते हैं और मस्तिष्क में उस सामग्री के अर्थ को ग्रहण करता जाता है। मौन पाठ (वाचन) करते हुए पाठक के होंठ तक नहीं हिलते।

मौन पाठ (वाचन) का महत्त्व

सस्वर वाचन की भाँति मौन पाठ का भी बहुत महत्त्व है जिसको हम निम्न प्रकार से समझ सकते हैं—

(1) मौन वाचन छात्र-छात्राओं को किसी लिखित सामग्री के विचारों की गहराई तक पहुँचने में सहायता देता है।

(2) यह छात्र-छात्राओं में चिन्तनशीलता का विकास करता है, जिससे उनकी कल्पना-शक्ति का विकास होता है और साथ ही साथ उनकी बुद्धि का भी विकास होता है।

(3) मौन वाचन में व्यक्तिगत क्षमता का महत्त्व होता है। कोई भी छात्र अपनी क्षमता के अनुसार कितना ही अधिक पढ़ सकता है।

(4) एकान्त के क्षणों में रुचिकर लेख व पुस्तक को पढ़कर उसका आनन्द उठाया जा सकता है।

(5) इससे स्वाध्याय की आदत का विकास होता है।

(6) इसके माध्यम से द्रुत वाचन (तीव्र गति से वाचन) करके विस्तृत अध्ययन किया जा सकता है।

मौन वाचन (पाठ) के उद्देश्य

मौन वाचन के निम्न उद्देश्य हैं—

(1) छात्र कम से कम समय में अधिक से अधिक सामग्री को आत्मसात् करके समय का सदुपयोग कर सकें।

(2) छात्रों में चिन्तन एवं तर्क-वितर्क शक्ति का विकास करना।

(3) वे लिखित सामग्री को पढ़कर समझ सकें और अपनी कल्पना शक्ति का विकास कर सकें।

(4) उनको तीव्र गति से पढ़ने का अभ्यास कराना।

(5) परिचित शब्दावली को सक्रिय रूप देना।

(6) पाठ्य सामग्री का अर्थ ग्रहण करके उसके सार को समझने योग्य बनाना।

उपरोक्त उद्देश्य की प्राप्ति उस समय तक सम्भव नहीं जब तक कि वातावरण उनके अनुकूल न हो। वातावरण की अनुकूलता और कुछ अन्य बातें जो मौन वाचन में सहायक सिद्ध होती हैं, उनका उल्लेख निम्न है–

मौन वाचन (पाठ) में सहायक बातें

मौन वाचन करते हुए आवाज बिल्कुल नहीं होनी चाहिए। अतः बिना होठ हिलाए मन ही मन में पढ़ना चाहिए। पढ़ते हुए एकाग्रता होनी चाहिए। पाठक का चित्त एकाग्र होने पर ही पाठ्य वस्तु का अर्थ व भाव ग्रहण किया जा सकता है।

मौन वाचन के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निम्न आवश्यक बातों को अवश्य ही ध्यान में रखा जाए–

(1) शान्तिपूर्ण वातावरण

(2) एकाग्रता

(3) विस्तृत शब्दावली

(4) व्याकरण के नियमों का ज्ञान

(5) समुचित ज्ञान

(6) तनाव रहित होना

जिन बातों का उल्लेख किया गया है, उनकी कितनी ही पूर्णता क्यों न हो, कुशल शिक्षण के उद्देश्य की प्राप्ति नहीं की जा सकती। इसलिए मौन वाचन करते समय शिक्षक को यह जानने का प्रयास करना चाहिए कि बालक कहाँ तक किसी लिखित भाषा को समझने में सफल हुए हैं ? कभी-कभी बालक पुस्तक के अक्षरों पर दृष्टि तो डालते रहते हैं, परन्तु उनका ध्यान कहीं और होता है। शिक्षक को ऐसे बालकों और उनकी समस्या को समझने का प्रयास करना चाहिए। उसे बालकों से बीच में प्रश्न पूछते रहना चाहिए, ताकि छात्र-छात्राओं का ध्यान वाचन सामग्री की ओर रहे।

मौन पाठ (वाचन) की शिक्षा
(EDUCATION OF SILENT READING)

मौन पाठ करना भी एक कला है और इस कला के विकास के लिए छात्र-छात्राओं को अधिक से अधिक मौन पाठ के अवसर प्रदान करना चाहिए। हमारे सामने अब प्रश्न यह उठता है कि अवसर कब और कैसे प्रदान किए जाएँ ? जहाँ तक मौन पाठ का सम्बन्ध है, यह तभी सम्भव हो सकता है जब भाषा पर छात्र-छात्राओं का कुछ सीमा तक अधिकार हो जाए। भाषा पर अधिकार के साथ-साथ छात्राओं की मानसिक दशा भी मौन पाठ के अनुकूल हो। स्पष्ट है कि आरम्भ की कक्षाओं में मौन पाठ नहीं कराया जा सकता, क्योंकि छोटे बालक बहुत चंचल होते हैं और वे किसी एक स्थान पर बैठकर दत्तचित्त होकर किसी भी कार्य को नहीं करते। दूसरी बात यह भी है कि उनको भाषा का ज्ञान बहुत सीमित-सा होता है। अनुभव के आधार पर अगर देखा जाए तो कक्षा तीन से पहले कदापि भी मौन पाठ करवाना सम्भव नहीं है।

कक्षा तीन में भी छात्र-छात्राएँ इस योग्य नहीं होंगे कि वे सही ढंग से मौन पाठ करने लगें। इस स्तर पर भी इतना ही सम्भव है कि शिक्षक छात्र-छात्राओं को उचित स्थान पर बैठाकर उनको मौन पाठ करने के लिए प्रेरित, अर्थात् मौन पाठ करने की आदत डालें। मौन पाठ के लिए अवसर दूसरे

विषयों के अन्तर्गत भी मिलते हैं, लेकिन भाषा की शिक्षा के सन्दर्भ में गद्य लेखों और सहायक पुस्तकों के लिए मौन पाठ करवाना अधिक उपयुक्त और लाभप्रद होता है। यहाँ पर विशेष रूप से इस बात पर ध्यान दिया जाए कि कविता पाठ में मौन पाठ नहीं करवाया जाता, क्योंकि कविता के आनन्द का सम्बन्ध तो सस्वर वाचन से ही है। हाँ कक्षा चार के उपरान्त छात्र-छात्राओं को पुस्तकालयों और वाचनालयों में मौन पाठ के अवसर प्रदान किए जाएँ। इन स्थानों पर छात्र-छात्राओं की रुचि के अनुसार विषय सामग्री उपलब्ध होनी चाहिए। जो विद्यार्थी स्वेच्छा से उन्हें पढ़ना चाहें इसके लिए उनको अवसर उपलब्ध हों। यह सब कार्य शिक्षक की देख-रेख में होना चाहिए। छात्र-छात्राएँ अपनी रुचि की पत्र-पत्रिकाएँ और पुस्तक पढ़ें और उसके बाद उससे सम्बन्धित प्रश्न पूछने चाहिए। उनको अपनी बात को स्वतन्त्र रूप से कहने के अवसर भी दिए जाएँ। फिर बाद में कक्षा पाँच के बाद इस बात पर भी जोर दिया जाए कि छात्र-छात्राएँ जो कुछ मौन पाठ से समझें वे उसकी मौखिक अभिव्यक्ति भी कर सकें।

कक्षा छः से नियमित रूप से मौन पाठ का प्रशिक्षण व अभ्यास प्रारम्भ कर देना चाहिए और यह ध्यान रखा जाए कि मौन पठन के सभी तत्वों का उत्तरोत्तर विकास हो। शिक्षक का यह प्रयत्न रहना चाहिए कि छात्र-छात्राओं का मौन पठन की गति में निरन्तर विकास हो। छात्र-छात्राओं को मौन वाचन (पाठ) की क्रिया में प्रशिक्षित और अभ्यास करने के लिए यह आवश्यक है कि कक्षा में शान्त वातावरण हो और हवा और रोशनी का भी पर्याप्त प्रबन्ध हो।

इसके अतिरिक्त कुछ अन्य बातों को भी ध्यान में रखा जाए, जो इस प्रकार है–

(1) मौन वाचन उसी सामग्री का करवाया जाए जिसे छात्र-छात्राएँ समझ सकें।

(2) विषय सामग्री भाव और भाषा की दृष्टि से बहुत कठिन नहीं होनी चाहिए। अगर कठिन है तो शिक्षक को मौन पाठ कराने से पहले उन कठिनाइयों को दूर कर देना चाहिए।

(3) जब छात्र-छात्राएँ मौन पाठ करना शुरू कर दें तब शिक्षक को मौखिक रूप से कोई अनुदेश नहीं देना चाहिए।

(4) शिक्षक को मौन वाचन (पाठ) करने से पहले निर्देश दे देने चाहिए।

(5) मौन पाठ के बाद छात्र-छात्राओं को परस्पर वार्तालाप के अवसर दिए जाएँ। ऐसा करने से स्वाभाविक रूप से उनकी मौखिक अभिव्यक्ति का भी विकास होगा।

शिक्षक की भूमिका
(ROLE OF TEACHER)

सस्वर वाचन और मौन वाचन में शिक्षक की भूमिका एक जैसी नहीं रहती। मौन वाचन में शिक्षक की भूमिका में परिवर्तन हो जाता है। सस्वर वाचन में शिक्षक को मुख्य रूप से इस बात का ध्यान रखना पड़ता है कि कोई छात्र किसी शब्द का उच्चारण ठीक करता है या नहीं, यदि नहीं करता है तो उसका सही उच्चारण क्या होना चाहिए ? मौन पाठ (वाचन) में शिक्षक का ध्येय-छात्र-छात्राओं के उच्चारण से हटकर उनके समझने की क्षमता पर केन्द्रित हो जाता है। मौन पाठ (वाचन) कराते समय शिक्षक के लिए यह जानना आवश्यक होता है कि छात्र-छात्राएँ लिखित सामग्री को समझने में सफल हुए हैं या नहीं। अगर सफल हुए हैं तो कहाँ तक ? कभी-कभी कोई छात्र विषय सामग्री पर दृष्टि तो डालते रहते हैं परन्तु उनका ध्यान पाठ में न होकर कहीं और होता है। शिक्षक को ऐसे छात्र-छात्राओं को यथा सम्भव समझने का प्रयास करना चाहिए। ऐसी स्थिति में शिक्षक को छात्र-छात्राओं से उनकी कठिनाइयों के बारे में पूछते रहना चाहिए।

विस्तृत (द्रुत) वाचन और गहन वाचन (EXTENSIVE AND INTENSIVE READING)

सस्वर वाचन और मौन वाचन का सम्बन्ध पाठ्य पुस्तकों से है। मौन पाठ (वाचन) के अन्तर्गत हम दो प्रकार के वाचन की बात करते हैं—विस्तृत वाचन (द्रुत वाचन) और गहन (सूक्ष्म) वाचन। भाषा शिक्षण में दो प्रकार की पाठ्य पुस्तकें होती हैं। एक तो वे पुस्तकें जिनका अध्ययन पाठ्यक्रम के अन्तर्गत आवश्यक होता है। इन पुस्तकों को गहन (सूक्ष्म) वाचन की श्रेणी में रखा जाता है और दूसरे पाठ्यक्रम के अन्तर्गत पुस्तकें जिनको सहायक पुस्तकें कहा जाता है। ऐसी सभी अतिरिक्त पुस्तकों को विस्तृत (द्रुत) वाचन की श्रेणी में रखा जाता है।

गहन (सूक्ष्म) वाचन से तात्पर्य—सूक्ष्म (गहन) वाचन से तात्पर्य प्रत्येक शब्द, प्रत्येक वाक्य, प्रत्येक पाठ का गहनता से, अर्थात् सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन करना और इसके साथ ही साथ नए शब्दों के अर्थ का ज्ञान प्राप्त करना और वाक्यों के सही अर्थों को समझना है। गहन पाठ (वाचन) अर्थात् सूक्ष्म वाचन की पुस्तक शब्दावली, मुहावरे, नए भाव एवं विचार, उच्चारण, रचना और व्याकरण की दृष्टि से अध्ययन का केन्द्र होती हैं।

छात्र-छात्राएँ जब कम सामग्री को पढ़कर उसके अधिक अर्थ समझ सकें उसको सूक्ष्म वाचन या गहन वाचन कहा जाता है। इस प्रकार के वाचन का सम्बन्ध नियमित अध्ययन की पाठ्य-पुस्तकों से होता है।

विस्तृत वाचन (द्रुत वाचन)—छात्र-छात्राओं के लिए नियमित अध्ययन की पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त सहायक पुस्तकें भी होती हैं, जिनकी उनको आवश्यकता पड़ती है क्योंकि वे पुस्तकें पाठ्य पुस्तकों के लिए सहायक सिद्ध होती हैं। ऐसी पुस्तकों को शीघ्रता से पढ़ा जाता है। इसीलिए ऐसी पुस्तकों को द्रुत पाठ या विस्तृत पाठ की पुस्तकें कहते हैं। इस प्रकार द्रुत पाठ या विस्तृत पाठ से यह तात्पर्य है कि कम से कम समय में अधिक से अधिक वाचन या पाठ करना अर्थात् पढ़ना।

द्रुत वाचन (विस्तृत) का महत्व (IMPORTANCE OF EXTENSIVE READING)

(1) द्रुत वाचन में सीखी हुई या अर्जित शब्दावली के प्रयोग का पर्याप्त अभ्यास होता है।

(2) द्रुत पाठ की पुस्तकें पढ़ने से भाषा समझने की योग्यता एवं क्षमता का विकास होता है।

(3) पढ़ने की गति में तीव्रता आ जाती है, जो दैनिक जीवन में अधिक पढ़ने के लिए लाभप्रद सिद्ध होती है।

(4) मौन पाठ का अधिक से अधिक अभ्यास होता है।

(5) साहित्य में रुचि पैदा होती है और छात्र-छात्राएँ स्वतन्त्र रूप से साहित्य का अध्ययन करने लगते हैं।

(6) भावी जीवन के लिए छात्र-छात्राओं को प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। उनको अपने भावी जीवन में अधिक पढ़ने की आवश्यकता है।

(7) ज्ञानोपार्जन में वृद्धि होती है।

(8) महापुरुषों, विद्वानों और दार्शनिकों एवं वैज्ञानिकों के अमूल्य विचारों से परिचित हो जाते हैं।

(9) इससे देश, विदेश की घटनाओं की जानकारी प्राप्त होती है जिससे हमारे सामान्य ज्ञान का विस्तार होता है।

(10) कहानी, उपन्यास या साहित्य की किसी अन्य विधा को पढ़कर मनोरंजन होता है।

(11) इससे स्वतन्त्र रूप से स्वाध्याय करने की आदत का विकास होता है।

विस्तृत वाचन (द्रुत वाचन) के उद्देश्य (OBJECTIVES OF EXTENSIVE READING)

द्रुत वाचन के मुख्य रूप से दो उद्देश्य हैं जो निम्न हैं–

(1) छात्र-छात्राओं में शीघ्रता से पढ़ने की आदत डालना, ताकि वे इस योग्य हो जाएँ कि कम से कम समय में अधिक से अधिक पढ़ सकें।

(2) छात्र-छात्राओं में स्वतन्त्र रूप से स्वाध्याय की आदत का विकास करना और साहित्यिक प्रवृत्ति को विकसित करना।

द्रुत वाचन की पुस्तकें या सहायक पुस्तकों के आवश्यक गुण

(1) सहायक या द्रुत पाठ की पुस्तकों की शब्दावली परिचित और सरल होनी चाहिए।

(2) भाषा भी कठिन नहीं होनी चाहिए, क्योंकि द्रुत गति से वाचन तभी सम्भव हो सकता है जब पढ़ने में किसी प्रकार की कोई कठिनाई न हो।

(3) पठन सामग्री के विषय रुचिपूर्ण और छात्र-छात्राओं की अवस्था, आवश्यकता और स्तर के अनुकूल हो।

द्रुत (विस्तृत) वाचन की पुस्तकों के विषय निम्न प्रकार के हो सकते हैं

(1) शिक्षा प्रद एवं रोचक कहानियाँ हों।

(2) महापुरुषों का जीवन चरित्र हो।

(3) छोटे उपन्यास और एकांकी के रूप में सामाजिक बुराइयों का चित्रण हो।

(4) वर्णानात्मक और व्यंग्यात्मक लेखों को सम्मिलित किया जा सकता है।

(5) अविष्कारों और वैज्ञानिक खोजों पर प्रकाश डालने वाली विषय सामग्री हो।

लेकिन इस बात का ध्यान अवश्य ही रखा जाए कि विषय-वस्तु छात्र-छात्राओं के मानसिक स्तर के अनुकूल हो।

द्रुत पाठ (Extensive Reading) से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण बातें जो निम्न हैं–

(1) विस्तृत पाठ (द्रुत पाठ) का अध्ययन स्थूल होता है न कि सूक्ष्म।

(2) द्रुत पाठ का सम्बन्ध नई शब्दावली के सीखने से न होकर, पहले अर्जित शब्दावली के सक्रिय उपयोग से होता है।

(3) द्रुत पाठ में सस्वर वाचन की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि उच्चारण पर किसी प्रकार का ध्यान नहीं दिया जाता और केवल विषय सामग्री के अर्थ बोध का ध्यान रखा जाता है।

(4) इस प्रकार के वाचन या पाठ में व्याकरण के नियमों एवं रचना आदि पर ध्यान नहीं दिया जाता है।

(5) द्रुत पाठ में या विस्तृत पाठ में अर्थ ग्रहण करते हुए तीव्र गति से वाचन पर ही बल दिया जाता है।

द्रुत वाचन (विस्तृत वाचन) में शिक्षक की भूमिका (ROLE OF THE TEACHER IN EXTENSIVE READING)

(1) द्रुत वाचन सही ढंग से मौन वाचन के अन्तर्गत ही सम्भव हो सकता है। इसके लिए शिक्षक को समय का ध्यान रखना चाहिए, ताकि वह जान सके कि छात्र-छात्राएँ तीव्र गति से वाचन कर रहे हैं या नहीं।

(2) शिक्षक को बीच-बीच में या द्रुत पाठ के अन्त में छात्र-छात्राओं से प्रश्न पूछने चाहिए, ताकि वे सतर्क रहें।

(3) विस्तृत वाचन (द्रुत वाचन) में किसी प्रकार की छात्र-छात्राएँ कठिनाई का अनुभव करें तो शिक्षक को उन कठिनाइयों को अवश्य ही दूर करना चाहिए।

(4) शिक्षक को चाहिए कि द्रुत वाचन के माध्यम से उन्हीं पाठों को पढ़ाये जो सरल एवं सुगम हों।

शैक्षणिक दृष्टि से वाचन की उपयोगिता (UTILITY OF READING TO EDUCATIONAL VIEW)

किसी भी तरह का कोई भी वाचन हो उसके लिए कोई भी नियम का बनाना सम्भव नहीं है। नियम बनाने का प्रयास भी नहीं करना चाहिए। जहाँ जिस वाचन की आवश्यकता हो वहीं पर उसका अवश्य ही प्रयोग होना चाहिए। इस दृष्टि से देखा जाए तो छोटी कक्षाओं में जितनी सस्वर वाचन की आवश्यकता होती है उतनी उच्च कक्षाओं में नहीं होती। क्योंकि उच्च कक्षाओं में पहुँचने तक छात्र-छात्राओं को उच्च उच्चारण का पर्याप्त रूप से अभ्यास हो चुका होता है। यहाँ पर ध्यान देने की एक बात यह भी है कि जिन शिक्षकों का अपना वाचन शुद्ध नहीं होता उनको आदर्श वाचन नहीं करना चाहिए, क्योंकि इसका प्रभाव छोटे बालकों पर विपरीत ही पड़ेगा। अनुकरण वाचन के लिए भी किसी प्रकार का ऐसा नियम नहीं बनाना चाहिए कि कितनी विषय सामग्री का वाचन और कितने छात्र-छात्राओं से करवाना चाहिए। जो छात्र-छात्राएँ वाचन में अधिक अशुद्धियाँ करते हैं उनसे पर्याप्त विषय सामग्री का वाचन कराया जाना चाहिए। शिक्षक को वाचन किसी भी प्रकार के क्रम के अनुसार नहीं कराना चाहिए। सरल पाठों के लिए विस्तृत वाचन और पाठ्य पुस्तक के लिए गहन वाचन (सूक्ष्म वाचन) कराना उचित रहता है। सूक्ष्म अध्ययन के पाठों का आदर्श पाठ पहले शिक्षक को स्वयं करना चाहिए और फिर बाद में अनुकरण पाठ छात्र-छात्राओं से कराना चाहिए। दूसरों के लिए बिना बाधित हुए मौन पाठ का कराना उचित रहता है। सभी सार्वजनिक स्थानों पर मौन पाठ ही किया जाता है।

गहन पठन (INTENSIVE READING)

गहन पठन के अन्तर्गत गहन रूप से किसी भी विषय को पढ़ाया जाता है। इस प्रकार के पठन कार्यों में व्याकरण, अर्थ, तकनीकी तथा हाव-भावों का विशेष ध्यान रखा जाता है।

(1) गहन पठन में शब्दावली का भी उचित ध्यान रखा जाता है। साथ ही शब्दों तथा पैराग्राफ आदि का भी ध्यान रखा जाता है।

(2) गहन पठन में व्याकरण के नियमों को भी ध्यान में रखा जाता है।

(3) गहन पठन से शब्दों में पकड़ तथा सूचना को भलीभाँति जाना जाता है।

गहन पठन के उद्देश्य
(AIMS OF INTENSIVE READING)

गहन पठन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

(1) गहन पठन के द्वारा ज्ञान को बढ़ावा दिया जाता है, साथ ही छात्रों को सही हिन्दी व भाषा बोलने में सहायता प्राप्त होती है।

(2) छात्रों की शब्दावली को सुधारा जाता है।

(3) भाषा में उचित पकड़ बैठ जाती है।

गहन पठन के स्तर
(STAGES OF INTENSIVE READING)

गहन पठन के स्तर निम्नलिखित हैं—

(1) सर्वप्रथम पठन विषय की भूमिका के विषय में छात्रों को बताया जाता है। इसके लिए छात्रों को सर्वप्रथम पिछली भूमिका के विषय में बताया जाता है। तत्पश्चात् छात्रों से परिचय सम्बन्धी प्रश्नों को पूछा जाता है। फिर छात्रों को पढ़ाकर उनसे रिवीजन प्रश्न (Revision questions) पूछे जाते हैं।

(2) भूमिका के पश्चात् शिक्षकों के द्वारा छात्रों को पाठ से सम्बन्धित सही उच्चारण, बलाघात आदि को देखा जाता है।

(3) तृतीय स्तर के अन्तर्गत छात्रों को ध्यान रखकर उनसे जोर से बुलवाकर पढ़ाया जाता है। कक्षा के अन्य छात्र इस पाठ को ध्यानपूर्वक सुनते हैं तथा शिक्षक के द्वारा छात्र की गलतियों को नोट किया जाता है।

(4) प्रत्येक छात्र की बुद्धिलब्धि के अनुसार छात्रों को पढ़ाया जाता है। शिक्षकों के द्वारा छात्रों की कमजोरियों का पता लगाया जाता है तथा उन्हें दूर किया जाता है।

(5) तत्पश्चात् शिक्षकों के द्वारा छात्रों को व्याख्या प्रदान की जाती है।

(6) इसके बाद व्यापक प्रश्नों को लेकर छात्रों को ज्ञान प्रदान किया जाता है।

गहन पठन के लाभ
(ADVANTAGES OF INTENSIVE READING)

गहन पठन के लाभ निम्नलिखित हैं—

(1) मौखिक तथा मौन पठन के सभी लाभों को इसमें पाया जाता है।

(2) बालकों की शब्दावली बढ़ती है।

(3) बालकों के आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

(4) छात्रों में पठन कार्यों की आदतों में वृद्धि होती है।

(5) छात्रों के चेहरे की मौखिक अभिव्यक्ति में विकास का अनुभव किया जाता है।

गहन पठन के दोष
(LIMITATIONS OF INTENSIVE READING)

गहन पठन के दोष निम्नलिखित हैं—

(1) यह एक अधिक समय लेने वाली विधि है।

(2) यह कठिन व व्याख्यात्मक विधि है।

(3) यह विधि व्याकरण पर अधिक ध्यान नहीं देती है।